# मैं कालिंजर किला हूं...

**बुंदेलखंड का इतिहास बुंदेली राजाओं की वीरगाथा से भरा हुआ है। यहां के बांदा जिले में स्थित कालिंजर का किला भी भारत के बदलते सांस्कृतिक और राजनीतिक परिदृश्य का गवाह रहा है। इसे भारत के सबसे विशाल और अपराजेय किलों में गिना जाता है। प्राचीन काल में यह किला जेजाकभुक्ति (जयशक्ति चन्देल) साम्राज्य के आधीन था।**

मैं 10वीं शताब्दी तक चन्देल राजपूतों के आधीन रहा फिर रीवा के सोलंकी राजाओं के नियंत्रण में आया। सोलंकी राजाओं के शासनकाल में मुझ पर महमूद गजनवी, कुतुबुद्दीन ऐबक, शेरशाह सूरी और हुमांयू ने आक्रमण किए, लेकिन कभी विजय पताका नहीं फहरा सके। मुझे जीतने के चक्कर में ही तोप का गोला लगने से शेरशाह की मृत्यु हुई थी। हालांकि सम्राट अकबर ने मुझे जीत लिया, लेकिन बाद में बीरबल को तोहफे में दे दिया था। बाद में बुंदेल राजा छत्रसाल ने मेरे ऊपर विजय पताका फहराई। अंग्रेजों ने भी मुझ पर शासन किया। मेरे परिसर में कई प्राचीन मन्दिर हैं। इनमें कई मन्दिर तीसरी से पांचवीं सदी के हैं। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगने वाला कार्तिक मेला मेरा प्रसिद्ध सांस्कृतिक उत्सव है। मुझे देखने आज भी देश-विदेश से पर्यटक आते हैं और प्राकृतिक सौंदर्य देखकर ठगे से रह जाते हैं।

## शेरशाह ने 6 माह युद्ध किया और जान गंवाई

1544 में राजा कीरत सिंह यहां के महाराज थे। तब शेरशाह सूरी ने इस किले पर आक्रमण किया था। उसकी विशाल सेना ने किले को चारो तरफ से घेर लिया। छह माह तक घनघोर युद्ध चला लेकिन बुंदेली सैनिकों को वह परास्त नहीं कर सका। युद्ध में विजय न मिलती देख शेरशाह ने यहां किले के पास ही ऊंची मीनार बनाने का निर्णय लिया। इसका निर्माण भी उसने कराया और मीनार के ऊपर ही उसने गोला- बारूद चढ़ाने का आदेश सैनिकों को दिया। सैनिकों ने गोला-बारूद मीनार पर पहुंचाया, लेकिन एक गोले के फटने से शेरशाह गंभीर रूप से जख्मी हुआ और उसकी मृत्यु हुई।

**नीलकंठ मंदिर आस्था का केंद्र**

किले में नीलकंठ महादेव का मंदिर है। चंदेल शासक परमादित्य देव ने इस मंदिर की स्थापना की थी। यहां भगवान शिव तक पहुंचने के लिए दो द्वारों से होकर गुजरना पड़ता है। यहां स्थापित शिवलिंग स्वयंभू है और नीले पत्थर का है।

## अलग- अलग नामों से रही पहचान

इतिहासकार बताते हैं कि कालिंजर को अलग- अलग युग में भिन्न- भिन्न नामों से जाना गया। सतयुग में इसे कीर्तिनगर, त्रेतायुग में मध्यगढ़, द्वापर में सिंहलगढ़ और कलियुग में कालिंजर नाम से जाना गया। इतिहासकार इसे मध्यकालीन भारत का सबसे अच्छा किला मानते हैं। किले में गुप्त काल, प्रतिहार काल और नागर जैसी स्थापत्य शैलियां दिखाई देती हैं। इस किले में राजा व रानी के दो भव्य महल हैं। यहां पाताल गंगा नामक जलाशय भी है। यहां के पांडु कुंड में चट्टानों से निरंतर पानी टपकता रहता है। मान्यता है कि पाताल गंगा इसके नीचे से होकर ही बहती हैं। इसी से यह कुंड भरता है।

## किले में प्रवेश के लिए बने हैं 7 दरवाजे

किले के निर्माण को लेकर कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इसे चंदेल वंश के संस्थापक चंद्र वर्मा ने बनवाया था तो कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस दुर्ग का निर्माण केदार वर्मन ने कराया था। कलिंजर का किला वैसे तो शांत दिखता है लेकिन बहुत खौफनाक है। यहां सूरज ढलने के साथ सन्नाटा छा जाता है। पर्यटकों को सुरक्षाकर्मी किले से बाहर भेज देते हैं। कहा जाता है कि रानी महल से रात में घुंघुरुओं की आवाज सुनाई देती है। जमीन से आठ सौ फीट की ऊंचाई पर स्थित पहाड़ी पर बने इस किले में प्रवेश के लिए सात दरवाजे हैं। प्रथम द्वार को सिंह द्वार, तो अन्य गणेश द्वार, चंडी द्वार, स्वर्गारोहण द्वार, बुद्धगढ़ द्वार, हनुमान द्वार हैं। किले में सीता सेज नामकन छोटी से गुफा भी है। जिसमें एक पत्थर का पलंग और तकिया रखा हुआ है।



लेखक
पंडित आशु शर्मा
कानपुर

# गणपति के डिजाइनर स्वरूप गढ़ रहे शिल्पकार

**अब पत्थर नहीं प्लास्टर ऑफ पेरिस की प्रतिमाओं का चलन, उत्सव के बाद कर दी जाती हैं विसर्जित**

**कानपुर।** गणेश उत्सव के मद्देनज़र गणपति की मूर्तियों को आकार देने का काम अंतिम चरण में है। कानपुर में सौ से अधिक स्थानों में प्रतिमाएं बनाई जा रही हैं। राजस्थान से भी मूर्तिकार आए हैं। पिछले 25 साल से महाराष्ट्र की तर्ज़ पर अब कानपुर में भी गणेश उत्सव बड़े पैमाने पर मनाया जाता है 1 तीन हज़ार से अधिक स्थानों पर उत्सव होता है और हर जगह प्रतिमा स्थापित की जाती है। इस बार 26 अगस्त को गणेश चतुर्थी उत्सव शुरू होगा। निराला नगर, बाबूपुरवा और जीटी रोड (गोल चौराहा) पर शिल्पकारों को मूर्तियां गढ़ते देखा जा सकता है। डेढ़ फुट से 12 फुट तक की पांच हजार से अधिक प्रतिमाएं उपलब्ध हैं। यहां से आसपास के जिलों के कारोबारी भी थोक में मूर्तियां ले जाते हैं।

- **तीन दिन में तैयार होती मूर्ति :** निरालानगर में कन्हैया कुमार गणेश प्रतिमा को आकार देने के बाद रंग भर रहे थे। कन्हैया ने बताया अब प्लास्टर ऑफ़ पेरिस की प्रतिमाओं की मांग ज्यादा है। सांचे में ढली एक प्रतिमा बनाने में तीन दिन लगते हैं। पत्थर की मूर्ति में 10-15 दिन लगते हैं। तीन फुट की प्रतिमा चार हज़ार और 11 फुट की 15 हजार में मिल जाती है।
- **तीन पीढ़ी से कर रहे यही काम :** मूर्तिकार मुकेश ने बताया कि उनकी तीन पीढ़ी से मूर्ति गढ़ने का काम हो रहा है, अब आधुनिक तकनीक आ गई है। स्वचालित मशीनों के जरिये कटिंग, आकार देने और रंगने का काम आसान हो गया है। लेकिन हांथो से गढ़ी मूर्ति की बात ही अलग है।
- **कला विलुप्त होने का डर :** निराला नगर के फुटपाथ पर मूर्ति को आकार दे रही पार्वती ने बताया कि अब इस पेशे में परिवार चलाना मुश्किल है। उधार रुपये लेकर कच्चा माल खरीदा है। फुटपाथ का किराया और कमीशन भी देना पड़ता है। प्रतिस्पर्धा बढ़ी तो मुनाफा कम हो गया। सरकार ने ध्यान नहीं दिया तो कुछ समय बाद यह कला ही विलुप्त हो जाएगी।
- **पत्थर की मूर्ति 10 हजार से एक लाख तक :** पत्थर की दो फुट की मूर्ति 10 से 20 हजार और पांच फुट की 50 से 60 हजार में उपलब्ध है। इससे ऊंची 80 हजार से एक लाख तक की है। शिल्पकार रामकेश सैनी ने बताया कि ऑर्डर देने पर एक हफ्ते के भीतर मूर्ति तैयार हो जाएगी। इन दिनों गणेश प्रतिमाओं की बहुत मांग है। वह देवी-देवताओं, महापुरषों के अलावा किसी भी इंसान की प्रतिमा बना सकते हैं।

लेखक: शैलेश अवस्थी

# दिल टूटने और रिश्तों में घुटने की पड़ताल करती हैं देवेंद्र की फिल्में

**डॉक्टर देवेंद्र बना चुके समाज को सार्थक संदेश देने वाली 30 शार्ट मूवी**

आंखों के जाने-माने डॉक्टर देवेंद्र को अभिनय और फिल्म निर्माण का ऐसा जूनून चढ़ा कि अब वह मूल पेशे को छोड़ पूरी तरह रुपहली दुनिया में रम ही गए हैं। सात साल के भीतर 30 लघु फिल्में बना चुके हैं। डॉ. देवेंद्र पिछले 40 दशक से कानपुर में आंखों का इलाज कर रहे हैं। इस दौरान हज़ारों आपरेशन किए, लेकिन फिल्मों का शौक उनके जहन में पलता रहा। सात साल पहले काकदेव में अपना बड़ा नर्सिंग होम बंद कर फ़िल्म निर्माण का शौक पूरा करने में जुट गए। अभिनय के शौकीन अपने साथियों और उनके संपर्क सूत्रों को एकजुट किया। फ़िल्म निर्माण, कैमरा, लाइट, निर्देशन, एडिटिंग की बारीकियां सीखीं। उपकरण इकठ्ठा किए और काम शुरू कर दिया। इन लघु फिल्मों की शूटिंग कानपुर के पार्कों, सड़कों, मंदिरों और दोस्तों के घर-फ्लैटों में ही की। इन्हें यू- ट्यूब के जरिये प्रदर्शित किया और फिर देखते ही देखते इन्हें पसंद करने वालों की संख्या बढ़ती गई और इसी के साथ प्रोडक्शन टीम का हौसला भी बढ़ता गया। इन लघु फिल्मों के कथानक डॉ. देवेंद्र ने ही लिखे हैं, जो उनके अपने, मरीजों और समाज के विभिन्न वर्गों के अनुभव पर आधारित हैं। बदलते दौर में समाज की विकृतियों, टूटन, घुटन, अवसाद और रिश्तों पर बनी उनकी फिल्में सामाजिक मुद्दों को प्रदर्शित करने के साथ बेहद संवेदनशील तरीके से परिस्थितियों की पड़ताल करती हैं। हर फिल्म अंत में एक सीख देकर बताती हैं कि छोटी -छोटी बातें, अहंकार, दिखावट और बनावट किस तरह जिंदगी को गर्त में ले जाती है। इनमें मेरा क्या, ताकत, बेड़ियां, नहले पे दहला, बदगुमानियां, आदत जैसी फिल्में ज्यादा हिट हैं। इनमें खुद देवेंद्र, उनके साथी कलाकार धूरिया, शालिनी, सिम्मी, अशोक बजाज, संजय खन्ना, सुनील वाजपेई ने काम किया है। अब इन फिल्मों को अन्य बड़े नेट प्लेटफार्म पर ले जाने की तैयारी है।

अभिनेता देवेंद्र।

## अभी यू-ट्यूब पर प्रदर्शित हो रही हैं फिल्में, लगातार बढ़ते जा रहे हैं दर्शक

# बिठूर के इतिहास की सैर कराती है टिकैत राय बारादरी

कानपुर से 18 किलोमीटर दूर गंगा के किनारे स्थित धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक नगरी बिठूर (ब्रह्मावर्त) में विभिन्न राजाओं ने अपनी जरूरत के हिसाब से गंगा स्नान के लिए 52 घाटों का निर्माण कराया था। इनमें पत्थर घाट भी एक है। इस घाट का निर्माण राजा टिकैत राय बहादुर ने कराया था। घाट पर ही बारादरी बनी है, जिसे टिकैत राय बारादरी कहा जाता है। 18 वीं सदी में निर्मित पत्थर घाट, बारादरी और यहां बना मंदिर वास्तुकला का बेहतरीन नमूना और ऐतिहासिक धरोहर है।

प्रदेश की योगी सरकार ने राज्य के जिन 11 विरासत भवनों औप किलों को पर्यटन स्थल में बदलने का फैसला लिया है, उनमें टिकैत राय बारादरी भी शामिल है।बिठूर के पत्थर घाट पर बनी टिकैत राय बारादरी एक ऐतिहासिक इमारत है। करीब 0.217 एकड़ में निर्मित इस बारादरी में श्रद्धालु व दर्शनार्थी गंगा स्नान के दौरान रुकते थे। पत्थर घाट को लाल रंग के पत्थरों से निर्मित गया था। यहां बना शिव मंदिर बिठूर के मंदिरों में अलग स्थान रखता है। राजा टिकैत राय द्वारा पत्थर घाट को बनवाने की कहानी काफी रोचक और दिलचस्प है। जानकारी के मुताबिक वर्ष 1814 में लखनऊ के नवाब ने अवध क्षेत्र के दीवान राजा टिकैत राय को हाथी खरीदने की सलाह दी। नवाब ने टिकैत राय को इसके लिए खजाने से स्वर्ण मुद्राएं दिलाईं। इन मुद्राओं से राजा टिकैत राय ने बिठूर में घाट बनवा दिया। घाट बन जाने पर लखनऊ जाकर नवाब से कहा कि हुजूर हाथी तो खरीद लिया है, लेकिन गंगा नदी के उस पार है। टिकैत राय ने इस बहाने से नवाब को हाथी पर बिठाकर गंगा के उस पार से पत्थर घाट दिखाते हुए कहा कि हुजूर, वह देखिए हाथी वहां खड़ा है। दरअसल, पत्थर घाट पर बने शिव मंदिर का निर्माण कुछ इस तरह से किया गया था कि इसे किसी भी ओर से देखने पर हाथी का मस्तक नजर आता है। टिकैत राय की इस चतुराई और घाट का सौंदर्य देखकर नवाब बहुत खुश हुए।

- 18 वीं सदी में पत्थर घाट के साथ निर्मित बारादरी और मंदिर है वास्तुकला का बेहतरीन नमूना
- प्रदेश की योगी सरकार इस ऐतिहासिक धरोहर को हेरिटेज टूरिज्म के रूप में करेगी विकसित

## बिठूर के धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व की दिखेगी झांकी

- प्रदेश की योगी सरकार ने इस ऐतिहासिक धरोहर को पीपीपी मॉडल पर विरासत पर्यटन (हेरिटेज टूरिज्म) इकाई के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया है। इसके तहत टिकैत राय बारादरी को हेरिटेज होटल या होम स्टे में बदला जा सकता है, जिसमें राजा-महाराजाओं के समय की शिल्पकला और संस्कृति की झलक देखने को मिलेगी। बिठूर के धार्मिक और पौराणिक महत्व के साथ स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को सेहजने वाला म्यूजियम और आर्ट गैलरी बनाने की भी योजना है। इसमें पेंटिंग के जरिये, वाल्मिकी आश्रम, सीता रसोई, नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई, ब्रह्मा की खूंटी, ध्रुव टीला जैसे स्थानों का इतिहास दर्शाया जाएगा। इसके साथ ही थीम पार्क बनाया जाना भी प्रस्तावित है।

## कसौटी पत्थर का शिवलिंग

बिठूर के पत्थर घाट घाट के ऊपर एक शिव मंदिर है। इस मंदिर को महाकालेश्वर के नाम से भी जाना जाता है। सावन में यहां पूजा-अर्चना के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। मंदिर में 'कसौटी' के पत्थर का शिवलिंग स्थापित है। बलुआ मिट्टी के पत्थरों से निर्मित मंदिर को चारों कोनों से देखने पर हाथी के मस्तक दिखाई पड़ते हैं। सूर्य की किरणें शिवलिंग पर पड़ते ही अलौकिक छटा बिखेरती हैं। मंदिर की उत्तर दिशा में 10 फीट ऊंचा पत्थर का त्रिशूल स्थापित है।

## राजा टिकैत राय के मुकुट में बना रहता था दो मछलियों वाला चिह्न

राजा टिकैत राय बहादुर आसिफउदौला के शासनकाल में अवध के दीवान थे। वह कायस्थ समाज से थे। आसिफउदौला के दरबार में उनका स्थान काफी ऊंचा था। राजा टिकैत राय ने अपने समय में कई मंदिर, मस्जिद, तालाब, बारादारी और पुलों का निर्माण कराया। लखनऊ को संवारने और सुविधा संपन्न बनाने में उन्होंने बड़ा योगदान दिया। कहा जाता है कि राजा टिकैत राय के मुकुट में दो मछलियों वाला चिह्न अंकित रहता था, प्रदेश शासन के राजकीय चिह्न में इसका इस्तेमाल देखा जा सकता है।

लेखक-दीपक कुमार, कानपुर